आत्म निर्भर भारत बनाने की ग्रामोत्थान योजना की पहल

निखरते गांव, संवरती जींदगी, उभरता भारत

–डॉ ललन कुमार शर्मा
केन्द्रीय ग्रामोत्थान योजना प्रमुख
एवं
केन्द्रीय सह अभियान प्रमुख
एकल अभियान

भारत के प्रधानमंत्री जी ने बहुत ही प्रभावी रूप से '' आत्मनिर्भर भारत'' एवं ''वोकल फार लोकल'' का समयचीन नारा दिया है। वर्तमान की वैश्विक परिदृश्य में प्रधानमंत्री को भी देश को सुरक्षित रखने हेतु ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबुत करने के सिवा अन्य कोई मार्ग दिख नहीं रहा! सर्वत्र इसकी चर्चाएं भी हैं। परन्तु वही पुराना यक्ष प्रश्न सामने खडा है –''आखिर यह होगा कैसे एवं इसे करेगा कौन'' ? छः लाख से भी अधिक गांवों का विविधताओं से भरा देश है भारत! अलग–अलग प्रदेशों की अलग–अलग प्रकृति है। प्राकृतिक संसाधनों की भी अलग–अलग उपलब्धता है। अलग–अलग सामाजिक ताना–बाना है यहां। इनके समझ के बगैर आखिर ग्रामीण स्तर तक की कोई भी योजना सफल कैसे हो सकती है। पर भारत के सारे योजनाकार एवं सलाहकार तो **'अंग्रेजीदां'** ठहरे जिन्हें गांव के बारे में बहुत कम जानकारी है। जिन किताबों को पढकर वे बडी–बडी डीग्रियों एवं नौकरियां प्राप्त किये हैं उनमें तो खोजने से भी किसी पृष्ठ पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की बातें नहीं मिलती, मिट्टी–पानी–गोबर –गोमूत्र का तो कहीं जीक्र ही नहीं है उनमें। यूरिया, डी0ए0पी0 एवं केमिकल इन्सेक्टिसाइट एवं पेस्टिसाइड्स के उत्पादन एवं उपयोग के तरिके तो इन्हें बताया गया था पर इससे होने वाले दुष्परिणामों के बारे में इन्हें कुछ मालूम नही! विदेशों से मंगायी जाने वाली बडी–बडी मशिनों एवं मेगा इन्डस्ट्री बैठाने के सारे ज्ञान इन्हें दिये गये पर गांव की महिलाओं, युवाओं तथा किसानों की उपयोगिता के घरेलू सामानों से लेकर बढई–लुहार जैसे शिल्पकारों के औजार बनाने तक के तरीके इन्हें पता नही! स्वास्थ्य के क्षेत्र में डॉक्टरी की बडी से बडी डीग्रियां एवं बडे–बडे हॉस्पिटलों के जाल बनते जा रहे हैं पर बिमारी एवं बीमार व्यक्तियों की संख्या में कमी नहीं, प्रसूति विशेषज्ञ डॉक्टरों एवं नर्सिंग कॉलेजों की बाढ परन्तु हर प्रसूति के समय गर्भवती माँ का पेट का चिडा जाना अनिवार्य हो गया! साइनिंग इंडिया के इन सारे विशेषज्ञों एवं वर्तमान के योजनाकारों के प्रभूत्व के सामने क्या वास्तव में प्रधानमंत्री जी का नारा **'वोकल फोर लोकल'** का संदेश सफल होगा? इस बात पर गंभिरता से विचार की आवश्यकता है। हमलोगों ने गुलामी के सैंकडों वर्षों के बाद अब स्वतंत्र भारत के विकास की दिशा एवं दशा को भी देख लिया। देश का औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, केन्द्रीकरण एवं बाजारीकरण जैसे अनेकों मनमोहक प्रयासों के प्रभावों को देखा–समझा। जहां गांव के गांव युवाओं एवं जानवरों से खाली पडे हैं वहीं दूसरी ओर नगरों में अनियंत्रित भीड़! न तो गांव समृद्ध बने और न ही शहर खुशहाल हो पाया। सारे बडे लोगों ने भरपूर प्रयास कर देख लिया परन्तु परिस्थिति और भी विपरीत होती चली गई। यह तो वेसा ही था मानों दिल्ली जाने वाली ट्रेन पर बैठकर हम चेन्नई पहूंचने की बात सोच रहे हों!

ग्लोबलाइजेशन एवं बाजारीकरण के नाम पर हमने ऐसे–ऐसे कानून बना डाले एवं दूनियां से ऐसे–ऐसे समझौते कर लिये कि आज भारत के सभी गांव दुनियां के लिए एक बाजार बन गये। कन्जूमरिज्म का बाजार ऐसा फैला कि हमारे सारे ग्रामीण उत्पाद शत प्रतिशत गुणवत्ता वाले होने के बाद भी उन्हें

प्रचार–प्रसार एवं बाजार नहीं मिल पाये परन्तु विदेशी कम्पनियों के सारे उत्पाद गांव के गली–मुहल्लों एवं हाट बाजारों में घडल्ले से दिखाई देने लगे। भारत में गांव एवं शहर का रिश्ता बडा ही प्रगाढ़ एवं एक दूसरे पर निर्भर रहा है। जब शहर के लोगों ने ग्रमीण उत्पादों का उपयोग ही छोड दिया तो स्वाभाविक ही था कि बाजार के अभाव में पहले उत्पादक एवं फिर कारीगरी को धीरे–धीरे मौत का रास्ता देखना ही था। आज वास्तव में गांवों को पुनर्जीवित करना एक बहुत बडी चुनौति है, गांव एवं शहर को एक साथ आगे आना होगा तभी कहीं प्रधानमंत्री जी का यह नारा सफल हो पायेगा।

यह सत्य है कि आज भारत में एकल अभियान ही एक मात्र संगठन है जिसका देश के 1 लाख से भी अधिक गांवों में प्रत्यक्ष प्रकल्प हैं, 3 लाख गांवों तक संपर्क है एवं साथ ही भारत के लगभग सभी छोटे–बडे शहरो एवं महानगरों में लोगों के साथ सम्बन्ध। फिर राष्ट्रीय विचारधारा वाला संगठन होने के नाते आज प्रधामंत्री के इस आह्वान को सत्य करने हेतु एकल अभियान से उपयुक्त अन्य दूसरा कौन संगठन होगा? इसलिए वास्तव में यह एकल अभियान के लिए एक चुनौति भी है एवं एक अवसर भी ।

स्पष्ट है अब हमें पुनः गांवों की ओर ही लौटना पडेगा। हमें अपनी परम्परागत कृषि, पशुपालन, कारिगरी एवं ग्रामीण ज्ञान–विज्ञान को सम्मान देना होगा, उन्हें पुनर्जीवित कर गांव को संसाधनयुक्त बनाने होंगे। जब गांव सुन्दर, स्वस्छ, समृद्ध, रोजगारपरक एवं रहने लायक बनेंगे तभी वर्तमान की युवा पीढी गांव में रूक पायेगी। और जब लोग गांव में होंगे तभी तो कोई स्थायी योजना बन सकती है।

वैसे तो एकल अभियान ने अपने प्रारम्भिक काल से ही गांवों के सशक्तिकरण पर जोर दिया है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कार के साथ–साथ ग्राम विकास के मूलभूत सिद्धांतों को आधार बनाकर कार्य करने की प्रणाली विकसित की है। ग्रामोत्थान योजना ने अलग–अलग गांवों की परिस्थितियों के आधार पर स्थायी विकास के कार्यक्रम बनाये जिसमें समाज के सभी वर्गों का सामन्जस्य हो सके। महिला– युवा– किसान सभी विकास के कार्यक्रमों में भागीदार बनें ऐसा प्रारूप तय किया गया। एक ओर युवा वर्ग के लिए स्कील डेभेलप्मेंट का प्रशिक्षण चलाया गया तो वहीं महिलाओं हेतु, सिलाई–कढ़ाई, मशरूम उत्पादन पोषणवाटिका एवं फूडप्रोसेसिंग के कार्य प्रारम्भ हुए। किसानों हेतु जैविक खेती, पशुपालन एवं गो आधारित ग्रामोद्योग के कार्य को बल दिया गया। गांव में ही उपलब्ध संसाधनों को जिसमें मिट्‌टी–पानी, पशुधन एवं वनोत्पाद सहित परम्परागत कारिगरी भी शामिल है गांव के विकास के आधार बनाये गये। जहां एक ओर जहां इनके संरक्षण एवं संवर्द्धन का ध्यान रखा गया वहीं दूसरी ओर इनके सही उपयोग द्वारा गांव में रोजगार के साधन खडे किये गये।

ग्रामोत्थान योजना ने अपने ग्राम–विकास के कार्यक्रमों में **''आदर्श ग्राम''** के सोच को सामने रखते हुए विषयों को आगे बढ़ाया है। गत 7–8 वर्षों में ही कई ऐसे गांव खडे हो गये जहां से आज एक भी नवयुवक नौकरी के लिए अपने गांव छोड शहर की ओर पलायन नहीं करते, जैविक खेती, पशुपालन, बांसशील्प, सिलाई–कढाई एवं अन्य ग्रामीण कारीगरी के लिए स्थानीय संसाधनों को ही आधार बनाया है एवं आनन्द की जिंदगी जी रहे हैं।

झारखण्ड के गिरिडीह जिला का परमाडीह गांव तो एक आदर्श गांव के रूप में विकसित होकर अन्य ग्रामों के लिए भी प्रेरणा बनकर उभरा है।

1. **आदर्श ग्राम परमाडीहः**

   जिस गांव में वर्षात के दिनों में बीमार हो जाने के बाद उसके इलाज हेतु गांव से बाहर जाने का रास्ता तक नहीं था क्योकि गांव नदियों से चारों ओर से घिरा था, स्थिति तो ऐसी थी कि दूसरे गांव के लोग अपनी लड़कियों की शादी परमाडीह गांव में नहीं करना चाहते थे। यहां अशिक्षा,

कुपोषण, भूखमरी, बेरोजगारी एवं पलायन जैसी अनेकों समस्याएं स्थायी रूप ले ली थी। परन्तु ग्रामोत्थान योजना के प्रयास से जब वहां के लोगों ने यह ठान लिया कि अब सम्पूर्ण गांव में केवल जैविक खेती ही होगी तो पूरे गांव ने ही रासायनिक खाद का पूर्णरूपेन बहिष्कार कर दिया। दो–तीन वर्षों में ही परिणाम सामने आ गये। गांव का हर किसान अब अपनी जैविक खेती से चार से पांच लाख रूपये की वार्षिक आमदनी करता है। आज हर घर में कम से कम दो–तीन मोटर साईकिलें हैं एवं अब उनके भी 25 से 30 लाख रूपये के पक्के घर बनने लगे हैं। गांव का परिचय ही **करोड़पति का गांव** के रूप में हो चुका है। आज उस गांव के उपर कई डोक्यूमेंटरी फिल्म बन चुके हैं (https://youtu.be/EXeMHtCv2RM) परमाडीह गांव की जैविक सब्जी आस–पास के कई जिलों में बिक्री हेतु जाने लगी है, परमाडीह की जैविक सब्जी अब एक ब्रांड के रूप में जाना जाता है। हर घर में देशी गाय एवं बैलों की जोड़ी है, पोषण वाटिका के शुद्ध जैविक सब्जी, फल और देशी गाय का दूध सबों को उपलब्ध है फलतः कुपोषण की समस्या का स्थायी समाधान हो चूका है।

वहां के सारे किसान परिश्रमी हैं, नदी से खेतों तक की दूरी 500 से 1000 मीटर तक की हो जाती है, स्वाभाविक रूप से एक डीजल इंजन से इतनी दूरी तक सिंचाई का पानी नहीं पहूंच पाता तो लोग बीच–बीच में दो–दो तीन–तीन इंजन लगाकर पानी को लीफ्ट करते हैं । आज गांव से केमिकल फर्टिलाइजर का पूर्णतः बहिष्कार हो चूका है, अपने पशुओं के गोबर से वर्षभर का खाद पूर्ण नहीं हो पाता तो पास के दो तीन जिलों के गौशालाओं से प्रतिवर्ष 20 से 25 लाख रूपये का गोबर लोग खरीद कर मंगा रहे हैं। गो–आधारित खेती का एक सफल उदाहरण यहां उपलब्ध है। गांव से बाहर गये नवयुवक भी आज वापस आकर अपने गांव को संवारने में लग गये हैं , गांव से पलायन पूर्णरूपेन रूक गया है। वैसे तो सभी नवयुवक कम्प्यूटर प्रशिक्षित हो चूके हैं फिर भी वे जैविक खेती को ही अपना लाइफ मिशन बना चूके हैं, उन्होंने नवयूवक संघ बनाकर प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम करना एवं पूर्ण मद्यपान निषेध का संकल्प किया है। सभी महिलाएं सिलाई–कढ़ाई में प्रशिक्षित हैं एवं सबों के पास सिलाई मशिन भी उपलब्ध करा दिया गया है। आज महिला स्वावलम्बन के लिए महिलाओं की अलग स्वयं सहायता समूह कार्य करती हैं। गांव में ही बांस शिल्प, बढ़ईगिरी एवं लोहा के कारीगर उपलब्ध होने से ग्रामीण जीवन एवं कारोबार सहजता से चल रहा है।

Sample Photographs of Parmadih Village

Bridge & Road at Parmadih (Initiation of Gramothan)

Farmers of Parmadih

Glimpses of Organic Farming

Self Help Group of Tailoring for Mahila Swawlamban

Bamboo Craft work & Vegetable transportation with bike

Solar Street Light & Smokeless Chulha

Farmers Communiti Hall & Sanskritik Karyakram

Under Construction building & Complete Home by the Income of Organic Farming

2. **मनियाडीह गांव (गिरिडीह, झारखण्ड)**– पांच वर्ष पूर्व श्री जितेन्द्र वर्मा ने जैविक खेती का प्रशिक्षण लेकर अपने गांव में प्रथम बार जैविक खेती प्रारंभ की। उसके खेत एक पठार का हिस्सा था जहां एक इंच भी मिट्टी नहीं थी केवल पत्थर ही पत्थर थे । परन्तु जितेन्द्र ने जिदपूर्वक इन पत्थरों को खोद–खोदकर केवल गोबर की ताकत से पांच एकड़ जमीन पर सब्जी की खेती शुरू की। उंचे स्थान पर खेती की जमीन होने के कारण सिंचाई की सुविधा नहीं थी और नीचे से उपर तक पानी पहूंचाना आसान नहीं था। उसने अलग–अलग उंचाई पर तीन कुंआ खोदे, सबसे नीचे के कुंआ से बीच के कुंए में पानी भरकर पुनः वहां से सबसे उपर के कुंए में पानी पहूंचाना और फिर उससे सिंचाई करना एक कठिन कार्य था परन्तु जितेन्द्र वर्मा ने साहस नहीं छोड़ा और दो वर्ष होते– होते उसके पूरे पांच एकड जमीन पर फसल लहलहा उठे। अब वर्ष में कम से कम तीन फसल होने लगे हैं। उसे देख गांव के लगभग सभी 208 आदिवासी किसान भी आज जैविक खेती करने लगे हैं और सबों की आमदनी 4–5 लाख रूपये वार्षिक की है।

इसी गांव के श्री संतोष वर्मा ने तो अपने पूरे पांच एकड़ जमीन में जैविक खेती करने हेतु ड्रीप इरीगेशन एवं स्प्रींक्लर लगा लिया है। पहले वह स्वयं एक बेरोजगार युवक था परन्तु आज वह अपनी बंजर भूमि को भी अपने परिश्रम से उपजाउ बनाकर अन्य 15 से 20 लोगों को वर्ष भर रोजगार उपलब्ध करवाता है। अपने घर पर रहकर 10 से 15 लाख रूपये की आमदनी करना उसके लिए आज सामान्य

बात हो गई है। खेती की कमाई से ही उसने अपने गांव में 25 लाख रूपये का पक्का मकान बना लिया है। -https://youtu.be/EXeMHtCv2RM

Sample Photographs of village Maniyadih

Jitendra Verma

Santosh verma

3. **बेलडीह गांव (गिरिडीह, झारखण्ड)**– इस गांव की कहानी भी ठीक मनियाडीह जैसी ही है, एक साहसी किसान रामचन्द्र वर्मा के प्रयास के कारण आज पूरा गांव जैविक ग्राम बन चूका है। रामचन्द्र वर्मा प्रतिदिन कृषि के नये–नये प्रभेदों को खोजकर प्रयोग करते रहते हैं। इसी का परिणाम है कि आज बेलडीह में परन्परागत सब्जियों के अलावा शिमला मिर्च, गांठ गोभी, चुकंदर, ब्रोकली, स्वीट कोर्न, बेबी कोर्न एवं फ्रेंच बीन जैसी अनेकों प्रकार की सब्जियां उगने लगी हैं। पहाड़ी क्षेत्र होने के बावजुद भी वहां वर्षभर साग और सब्जी का उत्पादन होता रहता है। गांव में प्रवेश करने से लेकर खेतों के भ्रमण में ऐसा प्रतीत होता है मानों साक्षत सब्जी के जंगल से ही गुजर रहे हों। यहां के आलू का स्वाद कुछ खास ही है, कई जिलों में बेलडीह का आलू ब्राण्ड बन चूका है। आज कोई भी व्यक्ति गांव छोड़कर रोजगार खोजने बाहर नहीं जाता। यहां के सभी विद्यार्थी एवं नवयुवक कम्प्यूटर प्रशिक्षित हो चूके हैं एवं लडकियां सिलाई में प्रशिक्षित हो स्वावलम्बी बन अब उच्च शिक्षा की भी पढाई करने लगी है।

-https://www.youtube.com/watch?v=18hHWPricEY

Sample Photographs of Village Beldih

Ramchandra Verma

Ramchandra Verma's Younger brother

4. **पर्वतपूर गांव (गिरिडीह, झारखण्ड)**– इस गांव के लोगों ने जैविक खेती के साथ–साथ प्याज का बिचड़ा उगाने को अपना रोजगार बनाया और आज उस गांव से कई ट्रक प्याज का बिचड़ा आस–पास के कई जिलों में बिक्री हेतु जाता है।
5. **झारमुण्डा ग्राम (सुन्दरगढ़, उडिसा)**– इस गांव के एक जनजातीय किसान श्री रामलाल बहला के प्रयासों ने आज सम्पूर्ण ग्राम को जैविक ग्राम बना दिया, गांव में कुपोषण की समस्या का स्थायी समाधान हो चूका, आज सभी ग्रामीण अपनी जैविक खेती से ही परिवार के भरण पोषण करते हुये 3 से 4 लाख रूपये की वार्षिक आमदनी करते हैं। भूमिहीन श्रीकर किसान ने तो बटाई पर दूसरे की जमीन में पोषण वाटिका लगाया, पति–पत्नी दोनों के परिश्रम ने उसे सफलता दिलाई एवं आज वह अपनी कमाई से पक्का मकान बनाकर रहने लगा है। रामलाल बहला की बेटी सिलाई प्रशिक्षण लेकर

गांव में भी सिलाई सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र चलाती है आज गांव की सभी लडकियां सिलाई–कढ़ाई में प्रशिक्षित हो अपनी कमाई से आगे की पढाई कर रही है। सबों के पास आज मोटरसाइकिल तो नहीं पर स्कूल कॉलेज जाने हेतु साइकिल अवश्य हैं। सभी नवयुवक कम्प्यूटर प्रशिक्षित हो चूके हैं अति पिछडा माने जाने वाला बेरोजगारी एवं भूखमरी का दंश झेल रहा यह आदिवासी ग्राम आज मात्र 4–5 वर्षों में अपने परिश्रम एवं स्थानीय संसाधनों के आधार पर ही पूर्ण स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर है।

Sample Photographs of Jharmunda Village

Ramlal Bahala

Shikar Kishan

ग्रामोत्थान केन्द्र मालदा एवं तिनसुकिया के प्रयासों के कारण भी आज अनेकों गांव पूर्णतः जैविक एवं आत्मनिर्भर ग्राम बन चूके हैं।

इस प्रकार की अनेकों गांवों की कहानियां आज सबों के सामने हैं जहां लोगों ने अपने उपर विश्वास किया, गांवों में ही रहना स्वीकार किया फिर उनपर धरती माता, गौ माता एवं गंगा माता की कृपा होना स्वाभाविक था और आज ये सभी ग्राम पूर्ण आत्मनिर्भर हैं। केवल दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। ग्रामोत्थान योजना के इन प्रयासों से आज के ये उभरते गांव भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की पूनर्स्थापना की ओर एक सफल प्रयास है।

बडे़ शहरों के आकर्षण, वर्तमान शिक्षण पद्धति में श्रम की महत्ता एवं खेती के महत्व को कोई स्थान नहीं मिलना, केमिकल एवं मशीन आधारित कोमर्शियल खेती के युग में गांवों में लोगों को टिकाये रखना अपने–आप में एक चुनौति है। चार पांच वर्षों के प्रयासों से कुछ गांव आज खड़े होते दिख रहे हैं परन्तु इसे चार लाख गांवों तक पहूंचाना है। राह आसान भले न हो पर एकल अभियान के पास आत्मविश्वास भी है और समाधान भी!

हम सबों के लिए प्रसन्नता एवं संतोष का विषय है कि देर ही सही पर आज देश के नेतृत्व को देश की सही विकास धारा का ज्ञान हो गया है, सरकार की योजनाएं एवं योजनाकार तो अपने अनुसार प्रयास करेंगे ही पर हम सभी चिंतनशील लोगों के लिए भी यह एक अवसर है कि हम सभी देश के पुनरनिर्माण के इस अभियान में अपनी–अपनी भूमिका निभावें। आवें हम सभी मिलकर एकल अभियान के इस आव्हान के साथ जूडें–

स्वावलम्बी स्वाभिमानी भाव जगाना है.......

चलो गांव की ओर हमें फिर देश बनाना है।।